डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा जयंती समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–17.11.2016, समय– 11.30 बजे, स्थान–बक्सर)

बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह जी, माननीय सांसद श्री अश्विनी कुमार चौबे जी, बिहार विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री अमरेन्द्र प्रताप सिंह जी, केरल उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री यू॰पी॰ सिंह जी, जिला पार्षद और कार्यक्रम के संयोजक श्री अरविन्द प्रताप शाही जी, 'हिन्दुस्तान' अखबार के संपादक डॉ॰ तीर विजय सिंह जी, 'दैनिक–जागरण' के सम्पादक श्री सदगुरू शरण अवस्थी जी, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के अध्यक्ष श्री रविनन्दन सहाय जी, 'चन्द्रमा प्रसाद चेरिटेबल' के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मिश्र जी, कार्यक्रम में उपस्थित मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए पूरी दुनिया में विख्यात और विशिष्ट पहचान रखने वाली बक्सर की पावन धरती पर पहुँचकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की चरण–धूलि से गौरवान्वित होनेवाली तथा महर्षि विश्वामित्र के पावन आश्रम के रूप में विख्यात बक्सर की पवित्र धरती पर पहुँचना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। इस जिले का स्वतंत्रता–संग्राम में भी अभूतपूर्व योगदान रहा है। शहनाई के शहंशाह भारत रत्न उस्ताद विसमिल्लाह खान आपके डुमराँव के ही सपूत थे। आचार्य शिवपूजन सहाय, कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह और विजय मोहन सिंह जैसे हिन्दी साहित्य के कतिपय सितारे साहित्य की दुनिया में बक्सर जिले का नाम रौशन कर रहे हैं। बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्व॰ सरदार हरिहर सिंह भी इसी धरती के रत्न रहे हैं। इसी क्रम में डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा का नाम भी एक ऐसी शख्सियत के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने अपनी विद्वता,

राष्ट्रीयता, त्याग, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और परोपकारिता के बल पर बक्सर ही नहीं अपितु, सम्पूर्ण बिहार का नाम पूरे भारतवर्ष में रौशन किया। अंग्रेजी की एक कहावत है कि–''Rising Sun is the Index of day" अर्थात्, उदीयमान् सूरज ही इस बात का परिचायक होता है कि दिन में कितना उजाला होगा। ''होनहार बिरवान के होत चिकने पात'' की उक्ति से भी सभी अवगत हैं। डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा भी एक ऐसे ही बिरवे थे, जिनकी खूबियाँ बाल्यकाल से ही प्रकट होने लगी थीं। 10 नवंबर सन् 1871 को एक सामान्य मध्यवित्तीय परिवार में जन्म लेने वाले इस बालक की शिक्षा के प्रति ललक शुरू से बनी हुई थी। अपने माता–पिता से रामायण की कथा सुनने में इनकी गहरी अभिरूचि थी तथा ये सभी धर्मों की मुख्य बातों को हृदयंगम करने में ज्यादा तत्पर दिखते थे। डॉ॰ सिन्हा छात्र–जीवन से ही सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के प्रति अत्यन्त सजग और संवेदनशील तेजस्वी युवा थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा एक मकतब से शुरू हुई। बाद में इन्होंने कई विद्वान शिक्षकों से संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण की। पहले आरा जिला स्कूल, फिर बाद में टी॰के॰ घोष एकेडमी, पटना में शिक्षा पानेवाले सच्चिदा बाबू ने इंग्लैंड जाकर बैरिस्ट्री की शिक्षा ग्रहण की। इंग्लैंड में रहते हुए भी सच्चिदा बाबू भारतवर्ष की आजादी के लिए काफी चिन्तित रहा करते थे। बाद में उन्होंने आर॰एन॰ मधोलकर एवं सुरेन्द्र नाथ बनर्जी जैसे प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं से अपना सम्पर्क बढ़ाया। स्वतंत्रता–आन्दोलन में डॉ॰ सिन्हा साहब का योगदान अविस्मरणीय है।

स्वतंत्रता–आन्दोलन के दौरान सन् 1935 में जब 'साइमन कमीशन' की रिपोर्ट जारी की गई थी, तब डॉ॰ सच्चिदान्नद सिन्हा ने इस रिपोर्ट का बड़ा प्रखर और प्रबल विरोध किया था। उन्होंने बड़े जोरदार शब्दों में तब कहा था कि ''म ैंसस दवजए ूम बंद दवजए ूम

ूपसस दवजए ंबबमचज जीम ैपउवद ब्वउउपेपवद त्मचवतजण्ष् विरोध की यह शैली अत्यन्त स्पष्ट, निडर और तार्किक थी। डॉ॰ सिन्हा के व्यक्तित्व की यही निर्भयता, निडरता, स्पष्टता और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने की प्रवृत्ति उनके जीवन में अंतिम दिनों तक बनी रही।

अपनी अतुलनीय प्रतिभा की बदौलत ही, डॉ॰ सिन्हा भारतीय संविधान–सभा के अन्तरिम अध्यक्ष भी नियुक्त हुए थे। भारतीय–संविधान के निर्माताओं में डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा का नाम अत्यन्त गौरव के साथ लिया जाता है। भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अम्बेदकर, देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद एवं डॉ॰ सच्चिदानन्द जैसे महापुरूषों ने जिस रूप में तैयार की, वह भारतीय जीवन–दर्शन का मूल मंत्र है। भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' हमारे जीवन के नियमन के लिए एक ऐसा अमोघ मंत्र है, जिसका अनुसरण कर हम अपने भारतवर्ष को एक अनुपम और अद्वितीय सबल–सशक्त राष्ट्र बना सकते हैं।

डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा भारतीय राजनीति और बौद्धिक जगत में एक ऐसे महापुरूष के रूप में विख्यात रहे हैं, जिन्होंने छोटे राज्यों की कल्पना को भारत राष्ट्र की एकता के लिए जरूरी माना। डॉ॰ सिन्हा के विचार में, छोटे राज्यों की अवधारणा विकासपरक होने के साथ–साथ सभी क्षेत्रों के समान और संतुलित विकास के लिए आवश्यक है। उनका मंतव्य था कि छोटे राज्यों की स्थापना से विकास में और अधिक तेजी आती है, सबके संतुलित विकास होते हैं और फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता को भी बल मिलता है। यही कारण था कि डॉ॰ सिन्हा ने लंदन में अपनी बैरिस्ट्री की पढ़ाई के समय ही हिन्दुस्तान के नक्से में स्वतंत्र बिहार प्रान्त की स्थापना का सपना देखा था। उन्होंने तब 'बिहार टाईम्स' और 'बिहारी' नाम से पत्रों का प्रकाशन भी किया था। डॉ॰ सिन्हा के प्रयासों का ही नतीजा था कि बिहार को 1 अप्रैल, 1912 को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग किया गया। डॉ॰ सिन्हा ने बिहार को अलग प्रान्त का दर्जा

दिलाने के लिए कई तथ्यपरक और वैचारिक ग्रन्थों की रचना भी की। ष्वेउम प्उउपदमदज ठपींत बवदजमउचवतंतपमेष इनमें से एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसके अध्ययन से बिहार की गौरवशाली परम्परा, विरासत और अस्मिता का व्यापक परिचय मिलता है।

डॉ॰ सिन्हा ने 'इंपीरियल लेजिस्लेटिव कॉन्सिल', 'इंडियन लेजिसलेटिव एसेम्बली' एवं उड़ीसा लेजिस्लेटिव कॉन्सिल के सदस्य के रूप में, 'बिहार कॉन्सिल' के अध्यक्ष के रूप में तथा पटना विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपनी प्रतिभा, इतिहास–बोध, सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन और अनुपम देशभक्ति का उत्कृष्ट परिचय दिया।

डॉ॰ सिन्हा शिक्षा को विकास की महौषधि मानते थे। शिक्षा के प्रति उनका अनुराग ऐसा था कि पटना में उन्होंने 'सिन्हा लाईब्रेरी' की स्वयं स्थापना की। इस पुस्तकालय की लगभग 10,000 पुस्तकों को सिन्हा साहब ने स्वयं पंजीकृत किया था। डॉ॰ सिन्हा साहब की धर्मपत्नी श्रीमती राधिका देवी जी भी पुस्तकों के प्रति अत्यन्त आत्मीयता का भाव रखती थीं। पटना की 'सिन्हा लाईब्रेरी' आज भी इस दंपति के शिक्षा के प्रति असीम प्रेम की अमिट निशानी बना पूरे भारतवर्ष के बौद्धिक जगत् का ध्यान आकृष्ट करता है।

मित्रों, महापुरूषों की जयंतियाँ आयोजित करने के पीछे हमारा कुछ खास मकसद होता है। यह खास मकसद यही होता है कि हम महापुरूषों के जीवन–दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करें, उनके जीवन और सिद्धांतों से सबक लें और मौजूदा चुनौतियों से निबटने के लिए उन रास्तों पर चलें, जिन पर आगे बढ़ने के लिए हमारे महापुरूषों ने हमें उत्प्रेरित किया है। डॉ॰ सिन्हा का आज जब हम जयंती–समारोह आयोजित कर रहे हैं, तो हमारा यह दायित्व बनता है कि हम उनके

सपने और सिद्धांतों को मूर्त्त रूप देने के लिए संकल्पित हों। डॉ॰ सिन्हा ने 'भारतीय संविधान' के रूप में एक महान मर्यादा–ग्रन्थ तैयार करने में अपना जो सहयोग प्रदान किया और महान भारत के निर्माण का जो सपना देखा, उसकी सार्थकता तभी सिद्ध होगी, जब हम अपने राष्ट्र को पुनः विश्व का सिरमौर बनाने के लिए संकल्पित होंगे। डॉ॰ सिन्हा ने 'बिहारीपन' का जो भाव जगाया था, उसकी भी सार्थकता तभी साबित होगी, जब हम एक सुविकसित और समुन्नत बिहार के साथ–साथ, एक सशक्त और सुदृढ़ भारतवर्ष के पुर्ननिर्माण के प्रति अपने को समर्पित करें। मैं डॉ॰ सिन्हा साहब के पावन जयंती–सप्ताह के अवसर पर आप सबसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि आइये, हमसब मिलकर एक ऐसे सुन्दर, सुसंस्कृत और सुविकसित बिहार प्रदेश के निर्माण का दृढ़ संकल्प लें, जो भारतवर्ष की एकात्मकता, अखंडता और वैश्विक प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला दृढ़व्रती राज्य हो। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

****

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।